FESTIVALS IN INDIA : DUSSAHERA, DIWALI, HOLI, EID, CHRISTMAS INDEPENDENCE DAY, REPUBLIC DAY

भारत में त्योहार: दशहरा, दीवाली, होली, ईद, क्रिस्मस, स्वतंत्रता व गणतन्त्र दिवस:

FESTIVALS

उत्सव, त्योहार जीवन में रस भरते हैं; तीज-त्योहार न हों तो जीवन नीरस होजायगा। मानव जीवन में खुशियों, खेल तमाशों, मेलों त्योहारों, सामूहिक उत्सवों का बड़ा महत्व है। जब मनुष्य मेहनत से खा-कमा रहा होता है, पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को निभा रहा होता है तो ऐसे में जीवन की उदासी को खुशियों से भरने के लिए त्योहार-उत्सव मनाये जाते हैं; मौसम के बदलने पर, फ़सलों के पकने पर, किसी धर्मगुरु की जयन्ती पर, किसी महान घटना की स्मृति में, किसी शुभ अवसर पर मानव ने उत्सव मनाना शुरू किया। भारत में तो हर धर्म का, हर प्रान्त का, हर जाति का, हर क्षेत्र का एक से एक त्योहार मनाया जाता है। भारत में इतने त्योहार हैं कि इसे तो त्योहारों का देश भी कहा जा सकता है। हिन्दू समाज में तो आये दिन कोई न कोई त्योहार होता ही है। त्योहारों में लोग मेले लगाते हैं, घरों को सजाते हैं, नये कपड़े पहनते हैं, खूब सारे पकवान बनाते हैं, घूमते जाते हैं, आपस में बधाइयाँ देते हैं, नाचते-गाते हैं, खेलते-खाते हैं, स्नान-ध्यान करते हैं, दान-पुण्य करते हैं, उपहार बांटते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, सामूहिक आनन्द मनाते हैं। त्योहारों में खूब ख़रीदारी होती है, मनोरंजन के विविध रूप होते हैं।

हिन्दुओं में दशहरा, दीवाली, होली, रक्षा बंधन, मकर संक्रांति (खिचड़ी) बसंत पंचमी, नवरात्रि, शिवरात्रि, एकादशी, गणेश चतुर्थी, रामनवमी, कुंभ स्नान, हट पूजा इत्यादि अनेक त्योहार होते हैं। मुस्लिम समाज में ईद, बक़रीद, बारावफ़ात, शबेबरात, मुहर्रम, उर्स आदि उत्सव होते हैं। सिक्खों में बैसाखी, गुरुपरब, लोहड़ी; ईसाईयों में क्रिस्मस, ईस्टर, गुड फ़ाइडे; बौद्धों में बुद्ध पूर्णिमा, जैनियों में महावीर जयन्ती आदि उत्सव होते हैं। भारत में कुछ राष्ट्रीय पर्व भी हैं जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयन्ती इत्यादि। विभिन्न राज्यों में कुछ विशेष उत्सव भी धूम धाम से होते हैं जैसे बिहू, पोंगल, ओनम, पड़वा, जालीकट्टू, बिशु, अंबेडकर जयन्ती, रैदास जयन्ती, बाल्मीकि जयन्ती, जन्माष्टमी, भैया दूज, करवा चौथ, तीज, चेंटीचन्द, प्रकाशोत्सव एवं अगणित स्थानीय उत्सव।

दशहरा:

DASSEHRA

हिन्दू धर्म में दस दिन तक मनाये जाने वाला दशहरा, बंगाल में दुर्गापूजा के नाम से सबसे बड़ा त्योहार है। नवरात्रि के अंत में 'विजयादशमी' के नाम से मनाया जाता है। देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर के वध को बुराई पर सत्य की विजय के रूप में स्थापित है। इसमें रामलीला के मेले भी लगते हैं। दुर्गा-प्रतिमा के पांडाल भी सजाये जाते हैं। आश्विन माह (अक्टूबर) में यह आता है। रावण पर राम की विजय का स्मरण होता है। विसर्जन के दिन देवी की मूर्ति नदी में बहा दी जाती है। मैसूर का दशहरा भी प्रसिद्ध है जब राज भवन पूरा जगमगाता है। कुल्लू का दशहरा भी पर्यटकों के लिए प्रसिद्ध है। कलकत्ता में तो अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक भी आते हैं। दिल्ली के रामलीला मैदान में राष्ट्रपति आदि भी जाते हैं। बनारस की रामलीला भी चर्चित है। हर नगर में रामलीला के मेले लगते हैं और बंगाली समाज दुर्गा का पांडाल सजाता है। उत्तर भारत के हिन्दू भाई अपने-अपने घर जाते हैं और सपरिवार उत्सव मनाते हैं। रामलीला के मेले में खेल-तमाशे, झूले, सर्कस, जादू, करतब, नाना प्रकार के व्यंजन तथा अनेक प्रकार की वस्तुएँ दूर-दूर से बिक्री को आती हैं। अंतिम दिन रावण-दहन की भीड़ होती है। सारे नगर में राम-बारात निकलती है, बाज़ार सज जाते हैं, चारो ओर उत्सव का माहौल होता है।

DIWALI

दिवाली:- हिन्दू समाज में नव वर्ष दीपावली से कार्तिक माह (नवम्बर) में शुरू होता है। लक्ष्मी पूजन का यह त्योहार अंधकार व बुराई पर सत्य के प्रकाश की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसी समय धन तेरस व गोवर्धन पूजा भी होती है। नरक चतुर्दशी, भैया दूज एवं विश्वकर्मा पूजा भी इन्हीं दिनों होती है। घरों की सफ़ाई रंगाई-पुताई से त्योहार की तैयारियाँ होती हैं, लोग दूर-दूर से अपने घरों को आते हैं। घरों को रोशनी से सजाया जाता है; पहले मिट्टी के दीये जलाये जाते थे, अब बिजली के झालर जलाते हैं। व्यापारी दुकानों पर शुभ मुहूर्त में पूजन करते हैं, नये बही-खाते बदले जाते हैं। सभी नये-नये कपड़े पहनते हैं। मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं, परस्पर बधाइयाँ दी जाती हैं। पारिवारिक मित्रों को उपहारों का आदान-प्रदान होता है। दिवाली के पहले की रात को लोग छोटी दीवाली मनाते हैं; धनतेरस को बर्तन या और कुछ जरूर ख़रीदते हैं। लोग खूब आतिशबाज़ी करते हैं। रात भर बाज़ारों की रौनक में घूमते हैं। गोवर्धन के दिन अन्नकूट के खाने में सभी तरह की सब्ज़ियाँ एक में बनाकर खाते हैं। सारा शहर जगमगा उठता है। फिर पड़वा भी होता है। उत्तर भारतीय जहाँ गिरमिटिया मजदूर बन कर गये, फ़ीजी, गयाना, मॉरीशस, सूरीनाम, ट्रिनिडॉड-टुबैगो इत्यादि में भी इसकी छुट्टी होती है। प्रकाश के इस उत्सव में स्थानीय पर्यटक काफ़ी यात्राएँ करते हैं तथा पर्यटक-उत्पाद की बिक्री भी होती है।

HOLI

होली:- बसन्तोत्सव के रूप में रंगों का ये त्योहार प्रेम का त्योहार है। बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। लोग पुराने शिकवे मिटाकर गले मिलते हैं। फ़ाल्गुन माह (मार्च) में होलिका दहन छोटी होली के रूप में इसकी शुरुआत होती है। दूसरे दिन रंग वाली धूल, धुलंडी, फगुवा के नाम से मनायी जाती है। घरों में गुझिया व मिष्ठान भी बनता है; मिठाइयाँ रिश्तेदारों व दोस्तों में बाँटी जाती हैं। पहले टेसू के पीले फूल से खेली जाती थी, फिर रंगों की पिचकारी के दिन आ गये। एक दूसरे पर रंग फेंक कर गुलाल-अबीर लगाकर तन-मन रंग जाते हैं; लोग ठंडई भी पीते हैं। जमाइका, सूरीनाम, गयाना, ट्रिनिडाड-टुबैगो, मॉरीशस, फ़ीजी, दक्षिण अफ़्रीका, नेपाल व अन्य देशों में बसे प्रवासी भारतीय हिन्दू भी इसे मनाते हैं। किंवदन्ती है कि राजा हिरण्यकश्यपु की बहिन होलिका जब भक्त प्रहलाद को लेकर अपने दिव्य न जलने वाले वस्त्रों में अग्नि में बैठी तो जल के मर गयी, हरि ने प्रहलाद को बचा लिया; खम्भे से निकले भगवान नरसिंह ने हिरण्यकश्यपु को मार डाला और सत्य-धर्म की विजय हुई। इसी पावन स्मृति में होलिका जलायी जाती है। रंगों व मस्ती का ये उत्सव उत्तर भारत में बड़ा प्रसिद्ध है; पर्यटक दूर-दूर से अपने घरों को जाते हैं, नये कपड़े ख़रीदे और पहने जाते हैं। होली मिलन पर टोलियाँ मिलकर जोगीरा भी गाती हैं। इस त्योहार में पर्यटकों में बड़ा उत्साह होता है।

ईद:- मुस्लिम समाज का विश्व में सर्वश्रेष्ठ त्योहार है 'ईद उल फ़ित्र'। हिजरी सन् के शव्वाल माह में ये आता है। मान्यता के अनुसार जब एक महीने तक मुसलमान विश्व कल्याण व आत्म शुद्धि के लिए पवित्र माह में रमज़ान यानि रोज़े रखता है और बड़े संयम व पवित्रता से 30 व्रत रखता है, उसके बाद ईद का चाँद देख कर दूसरे दिन पूरी दुनियाँ में ईद का त्योहार मनाता है। प्रातः काल उठ कर नहा धोकर नये कपड़े पहनकर उल्लास के साथ ईदगाह जाता है, अल्लाह का शुक्रिया अदा करता है और सभी को ईद मुबारक कहकर गले मिलता है।

अमीर-ग़रीब सभी के घर सेवइयाँ (शीर) बनती है और दोस्तों को खिलायी जाती है। अमीर वर्ग अपने ग़रीब भाईयों को ज़कात (अनिवार्य दान) देता है ताकि वे भी उत्सव मना सकें। इस दिन वह 'फ़ित्रा' (एक प्रकार की निश्चित दान राशि) भी अदा करता है। लोग एक दूसरों के घर मिलने जाते हैं। सभी सजे धजे होते हैं और मेले जैसा लगता है। ईद-मिलन का भी आयोजन किया जाता है। हर मुसलमान भाई पूरे साल इस आनन्दोत्सव की उत्कंठा से प्रतीक्षा करता है। पर्यटक दूर देशों से अपने घर आते हैं। बाज़ारों में खूब ख़रीदारी होती है, पर्यटक-उत्पाद खूब बिकते हैं। ईद और होली को हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक भी मान कर सम्पूर्ण समाज भाईचारे से गले मिलता है।

EID

क्रिसमस: ईसाई जगत का ये सर्वश्रेष्ठ त्योहार है जो 25 दिसम्बर को महामानव ईसा मसीह के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। कहा जाता है कि पहला क्रिसमस रोम में 336 ईसवी में मनाया गया था। आठवीं शताब्दी में यह काफ़ी चर्चित हो गया जब शार्लमेन सम्राट बना था। सत्रहवीं सदी में प्यूरिटन्स ने इसे रोक दिया था परन्तु 1660 ई० में इसकी छुट्टी होने लगी। 1900 ई० में इंग्लीकन चर्च ने इसे बढ़ावा दिया। ईसाई लोग घर को 'क्रिसमस ट्री' से सजाते हैं, गिरजाघरों पर रोशनी करते हैं, नये कपड़ों में सजते हैं, सान्ताक्लाज़ बन कर बच्चों को उपहार बाटते हैं। चर्चों में प्रार्थनाएँ होती हैं, मेले लगते हैं; लोग बधाइयाँ देते हैं। क्रिसमस के कार्ड भी दोस्तों को भेजे जाते हैं; मिलकर गाते-बजाते हैं; खुशियाँ मनाने के लिए पर्यटक दूर देशों की यात्राएँ करते हैं; भारत में गोवा व केरल, पांडीचेरी, कलकत्ता आदि ईसाई बहुल स्थानों पर बड़े उत्सवों का आयोजन होता है। ईसाई खूब पर्यटक-उत्पाद खरीदते हैं। विश्व के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल यूरोप और वैटिकन सीटी सज धज के साथ लाखों पर्यटकों का स्वागत करती हैं। क्रिसमस से लेकर न्यू ईयर तक पूरी दुनियाँ में जश्न का माहौल होता है। भारत में झांकियां भी सजायी जाती हैं।

CHRISTMAS

स्वतंत्रता दिवस: भारत में राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण जनता 15 अगस्त को पूरे उत्साह के साथ स्वतंत्रता का पर्व मनाती है क्योंकि इसी दिन 1947 ई० में भारत ब्रिटिश उपनिवेश के रूप से आज़ाद हुआ था। इस दिन दिल्ली के मुगलकालीन लाल किले से देश के प्रधानमंत्री तिरंगा फहरा कर जनता को संबोधित करते हैं। देश की सभी राजधानियों, जिला मुख्यालयों पर सरकारी उत्सव मनाया जाता है। दो सौ वर्षों तक अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्ति के रूप में ये राष्ट्रीय पर्व आता है। स्कूलों में रैलियाँ निकाली जाती हैं, कालेजों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। कलेक्ट्रेट व पुलिस लाइन एवं अन्य संस्थानों में भाषण, नाटक, नृत्य, गीत, क्वि सम्मेलन, मुशायरे तथा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झड़ी लगी रहती है। घरों में लोग टी वी चैनेल्स पर आज़ादी के गीत-संगीत कार्यक्रम देखते हैं। नौजवान, विशेषकर विद्यार्थी तो इस दिन की खूब तैयारी करते हैं। विद्यालयों में लोग सज धज कर जाते हैं। तिरंगे से सड़कें व चौराहे भी सजाए जाते हैं। इस दिन सरकारी छुट्टी होती है; सभी अधिकारी अपने कार्यस्थलों पर झण्डा फहराते हैं, कर्मचारियों को बधाई देते हैं। सामान्य जनता पर्यटक बन कर घूमने निकल जाती है।

INDEPENDENCE DAY

REPUBLIC DAY

गणतन्त्र दिवस: 26 जनवरी को हर वर्ष भारत में गणतंत्र दिवस का पर्व बड़े शान से मनाया जाता है। इसी दिन 1950 ई० में भारत ने अपना संविधान स्वीकार करके सर्व प्रभुत्व सम्पन्न गणराज्य का स्वरूप धारण किया था। इस दिन राष्ट्रपति तिरंगा फहराते हैं और गणतंत्र के संवैधानिक मुखिया के रूप में राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। जल-थल-वायु तीनों सेनाएं सलामी देती हैं। दिल्ली के राजपथ पर विभिन्न प्रदेशों की झांकियाँ बैण्ड बाजे के साथ निकलती हैं। 'रिपब्लिक डे परेड' में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक भी आते हैं। सेना व पुलिस तथा एन० सी० सी० के कैडेट्स अनोखे करतब दिखाते हैं, फौजी ताक़त को प्रदर्शित किया जाता है; वायुसैनिक हवा में कलाबाज़ियाँ दिखाते हैं, लोक कलाकार सजे धजे गाते-बजाते अपना हुनर पेश करते हुए गुज़रते हैं। अन्य देशों के राजदूत भी समारोह में आते हैं; पास लेकर दिल्ली की जनता भी देखने उमड़ती है। इण्डिया गेट भी सजाया जाता है। सभी प्रदेशों की राजधानियों व ज़िला मुख्यालयों पर भी सरकारी आयोजन सम्पन्न होते हैं। सरकारी कार्यालयों पर अधिकारी राष्ट्रध्वज फहरा कर बधाई देते हैं। स्कूल-कालेजों में प्रभात फेरियाँ निकलती हैं फिर विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम व खेल प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं। विभिन्न संस्थाओं में साहित्यिक आयोजन व रंगारंग कार्यक्रम, कवि सम्मेलन, मुशायरे, नाट्य व नृत्य प्रस्तुतियाँ भी होती हैं। लोग सज कर घूमते हैं; पर्यटक दिल्ली और बड़े शहरों में जाते हैं। विदेशों में भारतीय दूतावासों में प्रवासी भारतीयों के जश्न में ये पर्व मनाया जाता है। 29 जनवरी को दिल्ली के राजपथ पर 'बीटिंग दि रिट्रीट' कार्यक्रम के साथ यह राष्ट्रीय पर्व सम्पन्न होता है। पर्यटन की दृष्टि से दिल्ली के लिए ये बहुत बड़ा उत्सव है।